

श्रीसुदर्शनभगवान

श्रीरस्तु

श्रीरंगदिव्यदम्पतिभ्यां नमः

सुदर्शनशतकम्

श्रीमदुभयवेदान्ताचार्य पीठ प्रचारार्थं

एवं

श्रीमद्रामानुजसहस्राब्दिसमये प्रकाशितम्

सम्पादक—

पं० श्री नि० खगेन्द्राचार्यः

श्रीफलाहारीजीयरस्वामीमठ, "श्रीरंगम्', ६२०००६

* श्रीमते रामानुजाय नमः *

॥ श्रीवानाचलमुनीन्द्राय नमः ॥



श्रीसुदर्शनशतकम्

श्रीवानमामलै (तोताद्रि) जीयर स्वामी

चरणचंचरीक

श्रीवैकुण्ठवासी बद्रीप्रपन्नरामानुजदासस्य

पुण्यस्मृतौ प्रकाशितम्



श्री वै० वा० श्रीबद्रीप्रपन्नस्वामी
श्रीसत्यनारायणमन्दिर, लक्ष्मणझूला

तृतीयावृत्ति १०००

श्रीमद्वरवरमुनि जयन्ती
२७-१०-७६

* श्रीमते रामानुजाय नमः *

शास्त्रीय वचन

दीक्षा— तप्तचक्राङ्कहीनाय नायं दद्यात् कदापिहि । प्राचीनपथभ्रष्टाय दानाद्धानिर्भवेद् ध्रुवम् ।।
मौन— मनः प्रवरणं शौचं मौनं मन्त्रार्थ चिन्तनम् । अव्यग्रत्वमनिर्वेदो जपसम्पत्तिहेतवः ।।
जितेन्द्रिय—धीरोधृतव्रतः मौनी जितक्रोधो जितेन्द्रियः । धौतवासास्त्वधः शायी विष्णुलोके महीयते ।।
स्थल— गृहे चैकगुणः प्रोक्तो गोष्ठे दशगुणः स्मृतः । अयुतं पर्वते पुण्ये नद्यां लक्षगुणो जपः ।।
कोटिर्देवालये प्राप्ते अनन्तो विष्णुसन्निधौ । सिद्धिपीठे तुलस्याग्रे वटपिप्पलसिद्धिदः ।।

श्रीसुदर्शनशतक समस्त श्रीवैष्णव वैदिक जगत के लिये अपूर्व रत्न है। इसकी रचना कार्य विशेष से एक बड़ी विपत्ति के समय श्रीरङ्गनिवासी, श्रीरङ्गनाथ भगवान के परम भक्त एवं उत्कृष्ट विद्वान् श्रीकूरनारायण मुनि ने लगभग आठ शताब्दी पूर्व की थी।

इसका पाठ एवं सविधि अनुष्ठान, शीघ्र ही इच्छित फल को देने वाला है। तबसे लेकर आज तक आराधक भक्त अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष की भावनाओं से सफल अनुष्ठान विधिवत् करते चले आ रहे हैं। वस्तुतः श्रीसुदर्शनराज के महत्व एवं विलक्षण चमत्कारोंसे समस्त संस्कृत वाङ्मय भरा हुआ है। इसमें दिये गये सौ श्लोक सौ प्रकार के ही मनोवाञ्छित फलों के देने वाले हैं, जोकि दुर्लभ से दुर्लभ कार्य की सिद्धि, अन्य सभी प्रकार की आधि-व्याधियों को नष्ट करके आयु आरोग्य,

धन-धान्य देते हैं। श्रीसुदर्शनशतक स्तोत्र अति कठिन और भाव गम्भीर है, किसी भी वैदिक या पौराणिक स्तोत्रादि का पाठ अर्थानुसन्धानपूर्वक करने के लिये विद्वान मन्त्रद्रष्टा आचार्य से सविधि अध्ययन करना आवश्यक है। पुस्तक से पढ़के वा परोक्ष में या छल-कपट से सुना अयोग्य अवैष्णव चक्राङ्कन हीन से लिया हुआ अनर्थकारी होता है। जिस मन्त्र का जप या सिद्धि करनी हो, उसके लिये उसके अनुरूप होकर पूजनादि जैसे "देवो भूत्वा देवं यजेत्" होना आवश्यक है।

अनुष्ठान के लिये आसन, सिद्धि सङ्कल्प, मन्त्र, मन, अन्न, द्रव्य, स्थल (क्षेत्र) शरीर शुद्ध हों। देवता पाँच जगह वसता है जैसे, १–मन्त्र, २–मण्डल, ३–जल, ४–अग्नि, ५–मूर्ति या यन्त्र। इन पाँचों को सविधि एकत्रित करके अनुष्ठान करना चाहिये।

१—मन्त्र या स्तोत्र—अर्थ सहित शुद्ध सस्वर परम्परागत आचार्य से प्राप्त और दृढ़ विश्वास निष्ठायुक्त हो।

२—मण्डल—अनुष्ठान को सिद्धि के लिये विधिवत मण्डल (चक्राब्जादि) की रचना।

३—जल—सर्वालङ्कारयुक्त कलश स्थापन पूजन (जिस देव का अनुष्ठान हो वैसा) तर्पण।

४—अग्नि—जिस देव का अनुष्ठान हो उसकी समिधा और उसी प्रकार का साकल्य, उन मन्त्रों से अग्निकुण्ड में यथोचित आहुति देवे। कुण्ड के अभाव में वेदी भी हो सकती है।

५—मूर्ति या यन्त्र—अनुष्ठान से सम्बन्धित मूर्ति या यन्त्र "सुवर्णप्रतिमां कृत्वा तां स्मरेत् ताञ्च पूजयेत् ।" सुवर्ण का कम से कम कनिष्ठ चार आने (३ ग्राम) की मूर्ति या यन्त्र बनवा कर (यन्त्र सही हो) उसका नित्य सर्वोपचार से पुण्याहवाचनादि सहित पूजन करना चाहिये ।

मन्त्र में जितने अक्षर हों उतने ही लक्ष जाप का पुरश्चरण होता है । कलियुग में चतुर्गुण बताया है । जप से दशांश होम, होम से दशांश तर्पण, तर्पण से दशांश मार्जन, मार्जन से दशांश श्रीवैष्णव भोजन । कहीं जप से द० तर्पण द० होम है । सुदर्शन कवच में २४ श्रीवैष्णव भोजन का उल्लेख है । द्रव्य के अभाव में दशांश जाप अधिक करने का भी विधान है ।

अनुष्ठानी को चाहिये, जितेन्द्रिय जितक्रोधी, सत्यवादी, परनिन्दा परस्तुतिहीन, परान्न व श्राद्ध का भोजन न करे, क्षौर, नख, काटे नहीं, त्रिकाल स्नान सन्ध्या करे, आहार शुद्ध, दीपक जलता रहे, मूर्ति या यन्त्र हो तो अन्न का नैवेद्य लगावे । असक्त व्यक्ति स्वयं न कर सके तो उपरोक्त गुणयुक्त योग्य विद्वान के द्वारा कराये तो जैसा अपना शरीर है वैसा ही उस आचार्य को मानकर द्रव्यादि से सब सुविधा देवे, "यथादेहे तथादेवे ।" अर्थ से हीन ऋत्विक्, मन्त्रहीन आचार्य ये दोनों ही कार्य की हानि करने वाले कहे गये हैं ।

"स्वाति चित्रा चतुर्दश्यां गुरौ वा शनिवासरे" श्रीसुदर्शन भगवान का चित्रा नक्षत्र शनिवार चतुर्दशी तिथि है, श्रीसुदर्शनशतक की १०० से एक सहस्र अखण्ड पाठ करने पर तत्काल सिद्धि

मिलती है। ११ पाठ, नित्य ४० दिन करने से १ मण्डल होता है। जिस कार्य की सिद्धि करनी हो उसका सम्पुट देने का विधान है। नित्य क्रम से पूजन, कवच, जाप, पाठ, अर्चना ये पञ्चाङ्ग अनुष्ठान के अङ्ग हैं, जिन्हें नित्य बराबर करे। न्यास और ध्यान, १ बार पहले करके फिर पाठ मात्र यथा संख्या करता जावे। इसी प्रकार माहात्म्य भी एक ही बार पाठ करें, अन्तिम व पूर्व।

इस पुस्तक का प्रकाशन श्रीवैकुण्ठवासी श्रीबद्रीप्रपन्न स्वामी, लक्ष्मणझूला सत्यनारायण मन्दिर के भण्डारीजी की पुण्य स्मृति में किया है। प्रेस की या प्रूफ संशोधन में कोई त्रुटि रही हो उसे सुधारकर ही पाठ करें, यह प्रार्थना है। अस्तु।

नोट—अन्य देवतान्तर अनुष्ठान करने पर यदि सफलता न मिले तो किया हुआ श्रम और व्यय सब व्यर्थ होता हैं, परन्तु भगवत सम्बन्धित अनुष्ठान अवश्य ही सफल होता है, कदाचित प्रारब्ध विशेष से सफल न हो तो किया हुआ परिश्रम और द्रव्य व्यर्थ नहीं होता, फल तो अवश्य ही मिलता है।



अ० भाद्र पूर्णिमा २०३१ —पं० श्री नि० खगेन्द्राचार्य

॥ श्रीः ॥

श्रीसुदर्शनपूजाक्रमः

पवित्रकरणम्

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

आसनप्रतिष्ठा

ॐ पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

त्रिराचम्य प्राणानायम्य पवित्रिधारणं कुर्यात् । पश्चात् श्रीगुरुपरम्परां स्मरेत ।

श्रीशैलेशदयापात्रं धीभक्त्यादि गुणार्णवम् । यतीन्द्रप्रवणं वन्दे रम्यजामातरं मुनिम् ॥

रम्यजामातृयोगीन्द्रपादरेखामहं सदा । तदायत्तात्मसत्तादि रामानुजमुनिं भजे ॥

यस्य द्विरदवक्त्राद्याः पारशद्याः परश्शतम्।
विघ्नं निघ्नन्ति सततं विष्वक्सेनं तमाश्रये ॥

अनन्तरं संकल्पं कुर्यात्

संकल्पम्

श्रीगोविन्द गोविन्द ॐ तत्सदद्य, अस्य श्रीगरुडानन्तविष्वक्सेनादिनित्यसूरि गौतमादि सप्तर्षि पराङ्कुशपरकालरामानुजयतीन्द्रादि संसेवितस्य, श्रीभूनीलादेवी-सहितस्य, अभिनवजलधरसुन्दरदिव्यमंगलविग्रहविशिष्टस्य, अखिलकोटिब्रह्माण्ड-नायकस्य, श्रीमन्नारायणस्य, इच्छया, नाभिकमलोद्भूत सकललोकपितामहस्य, ब्रह्मणः सृष्टिकुर्वतस्तदुद्धरणाय प्रार्थितस्य ह्यस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डे, श्रीमदादिवराहदंष्ट्राग्र-विराजितेऽस्मिन् भूर्लोके जम्बूद्वीपे सुमेरोर्दक्षिणदिग्भागे भारतवर्षे अ०पुण्यक्षेत्रे, अ०देशे, (अ० नगरे) गङ्गायमुनायाः अ० दिग्भागे अ० तीर्थतटे वा सन्निधौ सकल जगत्सृष्टुः परार्धं द्वितीय जीवती ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे एक पञ्चाशत्तमे वर्षे, प्रथमे मासे, प्रथमपक्षे

प्रथमदिवसे दिनस्य द्वितीये यामे, तृतीये मुहूर्ते, अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे, स्वायम्भुवस्वारोचिषउत्तमतामसरैवतचाक्षुषाख्येषु षटसु मनुष्वतीतेषु, सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे द्वापरान्ते श्रीकृष्णावतारे राजन्यचक्रचूडामणिविश्वसम्राट्धर्मावतार श्रीयुधिष्ठिरसम्वत्सरे वर्तमाने, कलियुगे, कलिप्रथमचरणे, श्रीमन्नृपतिविक्रमार्क राज्यात् वर्तमाने अमुकसंख्याके ··एवं श्रीमद्रारामानुजमुनिप्रादुर्भावात् अ० ···संख्याके अमुकनाम··· संवत्सरे, अमुक···अयने अ०···ऋतौ मासानामासोत्तमे अ० मासे अ० पक्षे अ० तिथौ अ० वासरे अ० नक्षत्रे अ० ··योगे, अ०···करणे, अ० ··राशिस्थिते चन्द्रे, अ० राशिस्थिते श्रीसूर्ये अ० ··राशिस्थिते श्रीदेवगुरौ, शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा स्थानस्थितेषु सत्सु एवंग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ·अ० गोत्रे, अ० प्रवरे, अ० राशि अ० नक्षत्र जातः अ० नाम शर्माहं (गुप्तोऽहं) ममोत्पातदुरितक्षय द्वारा समस्तपुरुषार्थसिध्यर्थं, मम सकुटुम्बस्य दीर्घायु-आरोग्य दृढ़गात्र प्रसादसिध्यर्थं सर्वारिष्टनिवृत्तिपूर्वकं श्रीभगवदाज्ञया भगवत्कैङ्कर्यरूपं श्रीसुदर्शनचक्रराजप्रसादसिध्यर्थं यथाशक्ति यथाज्ञान मिलितोपचारैः श्रीसुदर्शन यन्त्रपूजनं श्रीसुदर्शनशतकपारायणञ्च करिष्ये।

अथवा (यजमानार्थनम्) अमुकगोत्रराशिनक्षत्रोद्भवस्य अमुकनाम यजमानस्य करिष्यामि ।

करन्यासः—

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः
ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः
ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः
ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः
ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ह्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यासः—

ह्रां हृदयाय नमः
ह्रीं शिरसे स्वाहा
ह्रूं शिखायै वषट्
ह्रैं कवचाय हुम्
ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्
ह्रः अस्त्राय फट्

॥ अथ दशदिग्बन्धः ॥

ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय ऐन्द्रीं दिशं चक्रेण बध्नामि ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्रायाग्नेयीं दिशं चक्रेण बध्नामि ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय दक्षिणां दिशं चक्रेण बध्नामि ॥ ३ ॥

ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय निर्ऋतिं दिशं चक्रेण बध्नामि ॥ ४ ॥

ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय वारुणीं दिशं चक्रेण बध्नामि ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय वायव्यदिशं चक्रेण बध्नामि ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय कौवेरीं दिशं चक्रेण बध्नामि ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय ईशानदिशं चक्रेण बध्नामि ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय ऊर्ध्वदिशं चक्रेण बध्नामि ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते ज्वालाचक्राय अधोदिशं चक्रेण बध्नामि ॥१०॥
ॐ नमो भगवते कोटिसूर्यप्रकाशाय भूर्भुवः स्वरोमिति सर्वं दिग्बन्धनं कुर्यात् ॥

॥ अथ ध्यानम् ॥

शङ्खं चक्रं च चापं परशुमसिमिषुं शूलपाशांकुशांश्च-
विभ्राणं वज्रखेटं हलमुसलगदाकुन्तमत्युग्रदंष्ट्रम् ।
ज्वालाकेशं त्रिनेत्रं ज्वलदनलनिभं हारकेयूर भूषं-
ध्यायेत्षट् कोणसंस्थं सकलरिपुकुलप्राणसंहारचक्रम् ॥१॥

अस्मिन् श्रीसुदर्शन यन्त्रेसु (पुस्तक कोशेसु) श्रीसुदर्शनं आवाहयामि,

आसनं समर्पयामि, पादयोः पाद्यं समर्पयामि, हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि, ॐ भूर्भुवस्सुवः स्नापयामि, पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि, कावेरी जलस्नापयामि, स्नानान्तरं आचमनीयं समर्पयामि, वस्त्रोपवस्त्र स०, उपवीतं स० सर्वाभरण स० दिव्यपरिमल–गन्धान्धारयामि, हरिद्रा कुङ्कुमं स० अक्षतान् स० पुष्पाणि समर्पयामि, धूपं आघ्रापयामि, दीपं दर्शयामि, पुष्पैः पूजयामि ।

॥ श्रीसुदर्शनाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ओं सुदर्शनाय नमः
चक्रराजाय
तेजोव्यूहाय
महाद्युतये
सहस्रबाहवे
दीप्ताङ्गाय
अरुणाक्षाय

ओं प्रतापवते नमः
अनेकादित्यसङ्काशाय
प्रोद्यज्ज्वालाभिरञ्जिताय
सौदामिनीसहस्राभाय
मणिकुण्डलशोभिताय
पञ्चभूतमनोरूपाय
षट्कोणान्तरसंस्थिताय

ओं हरान्तः करणोद्भूत-रोषभीषणविग्रहाय नमः
१० हरिपाणिलसत्पद्म-विहारारमनोहराय
श्राकाररूपाय
सर्वज्ञाय
सर्वलोकार्चितप्रभवे

ओं चतुर्दशसहस्राराय नमः
चतुर्वेदमयाय
अनलाय
भक्तचान्द्रमसज्योतिषे
भवरोगविनाशकाय
रेफात्मकाय
मकाराय
रक्षोसृक्रूषिताङ्गकाय
सर्वदैत्यग्रीवनाल-
विभेदनमहागजाय
भीमदंष्ट्राय
उज्ज्वलाकाराय ३०
भीमकर्मणे
त्रिलोचनाय

२० ओं नीलवर्त्मने नमः
नित्यसुखाय
निर्मलश्रियै
निरंजनाय
रक्तमाल्यांबरधराय
रक्तचन्दनरूषिताय
रजोगुणाकृतये
शूराय ४०
रक्षःकुलयमोपमाय
नित्यक्षेमकराय
प्राज्ञाय
पाषण्डजनखण्डनाय
नारायणाज्ञानुवर्तिने
नैगमान्तःप्रकाशकाय

ओं बलिनन्दनदोर्दण्ड
विजयाकृतये [खण्डनाय नमः
मित्रभाविने
सर्वमयाय ५०
तमोविध्वंसकाय नमः
रजस्सत्वतमोद्वर्तिने
त्रिगुणात्मने
त्रिलोकधृते
हरिमायागुणोपेताय
अव्ययाय
अक्षस्वरूपभाजे
परमात्मने
परंज्योतिषे
पञ्चकृत्यपरायणाय ६०

ओं ज्ञानशक्तिबलैश्वर्य-
वीर्यतेजःप्रभामयाय नमः
सदसत्परमाय
पूर्णाय
वाङ्मयाय
वरदाय
अच्युताय
जीवाय
गुरवे
हंसरूपाय
पञ्चाशत्पीठरूपकाय ७०
मातृकामण्डलाध्यक्षाय
मधुध्वंसिने
मनोमयाय

ओं बुद्धिरूपाय नमः
चित्तसाक्षिणे
साराय
हंसाक्षरद्वयाय
मन्त्रयन्त्रप्रभावज्ञाय
मन्त्रयन्त्रमयाय
विभवे ८०
स्रष्ट्रे
क्रियास्पदाय
शुद्धाय
आधाराय
चक्ररूपकाय
निरायुधाय
असंरम्भाय

ओं सर्वायुधसमन्विताय नमः
ओंकाररूपिणे
पूर्णात्मने ९०
ओंकारसाध्यबन्धनाय
ऐंकाराय
वाक्प्रदाय
वाग्मिने
श्रींकारैश्वर्यवर्धनाय
क्लींकारमोहनाकाराय
हुं फट्क्षोभणाकृतये
इन्द्रार्चितमनोवेगाय
धरणीभारनाशकाय
वीराराध्याय १००
विश्वरूपाय

ओं वैष्णवाय नमः ओं सत्यपराय नमः ओं सुदर्शनाय नमः

विष्णुरूपकाय सत्यधर्मानुषङ्गकाय सर्वाभीष्टफलप्रदाय नमः १०८

सत्यव्रताय नारायणकृपाव्यूहतेजश्चक्राय

श्रीविजयवल्ली समेत श्री चक्रराजपरब्रह्मणे नमः हरिः ओम् ।

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणिसमर्पयामि ।



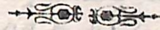
नैवेद्यम्–ॐ भूर्भुवस्सुवः + प्रचोदयात् । देवसवितः प्रसुवः । सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चयामि । अमृतोपस्तरणमसि । ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा' ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा, श्रीसुदर्शनाय नमः । मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि, अमृता-पिधानमसि । हस्तप्रक्षालनम् स ०। पादप्रक्षालनम् स० । आचमनीयं स० । उत्तरा पोषणं स० । करोदवर्तनार्थे चन्दनं स ० । कदली (ऋतु) फलं निवेदयामि-—

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्ली-दलैर्युतम् । कर्पूर-चूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।

ताम्बूलंपूगीफलं निवेदयामि । सर्वोपचारार्थे सुवर्णपुष्पदक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि ।



* आरती *



मङ्गलं चक्रराजाय महनीयगुणाब्धये । पद्मनाभकरांभोजपरिष्काराय मङ्गलम् ॥ १ ॥
काशीविप्लोषकाराय कल्याणगुणशालिने । मालिप्रमथनायास्तु महाधीराय मङ्गलम् ॥
गजेन्द्रार्तिहरायास्तु ग्राहद्वेधात्वकारिणे । दिनाधीशतिरोधानकर्त्रे दीप्ताय मङ्गलम् ॥
चित्रकारस्वचाराय चित्तनिर्वृतिकारिणे । नरकासुरसंहर्त्रे नानारूपाय मङ्गलम् ॥
चण्डस्ताञ्चितदोर्दण्डखण्डितामरशत्रवे । चामीकरनिभाङ्गाय चारुनेत्राय मङ्गलम् ॥
चैद्यासुरशिरोहर्त्रे चन्द्राह्लादकराय च । श्रीमते चक्रराजाय श्रितार्तिघ्नाय मङ्गलम् ॥

नीराजनानन्तरं – आचमनीयं स० रक्षां (सूत्र) धारयामि, मन्त्रपुष्पं समर्पयामि—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान्कामकामाय मह्यम् कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥ ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं

समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषः आन्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासदः।

ॐ विश्वाय नमो विश्व पालाय नमो विश्व कालाय नमः काल कालाय नमः। सर्वाय नमः सर्व रूपाय नमः सर्व भूपाय नमः सर्व हराय नमः॥ सर्व चराय नमः सर्व कराय नमो नमः॥

ॐ सुदर्शनाय विद्महे, हेतिराजाय धीमहि, तन्नोचक्रः प्रचोदयात्॥ (मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। प्रदक्षिणानमस्कारान् समर्पयामि।

पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मापापसंभवः। त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष! सर्वपाप हरो भव॥
अपराधसहस्रभाजनं पतितं भीम भवार्णवोदरे। अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्मसात्कुरु॥

* अथ श्रीसुदर्शन षडक्षरमन्त्रजपविधिः (द्वितीय) *

ओम्. अस्य श्रीसुदर्शनमहामन्त्रस्य, अहिर्बुध्न्यो भगवानृषिरनुष्टुप्छन्दः। श्रीसुदर्शन चक्रराजो भगवान् देवता। क्षौं महाज्वालाय बीजम्। क्लीं शत्रुमर्दनाय-शक्तिः। क्लीं सर्वभयनिवारणाय कीलकम्। श्रीभगवत्कैंकर्ये बाधानिवृत्तिपूर्वकम् अविच्छिन्नसन्तानेन विवृध्यर्थं षट्कोणमध्यस्थितविष्णुचक्रमन्त्रजपे विनियोगः।

* अथाङ्गन्यासः *

ॐ सं मूर्न्धि, ॐ हं भ्रूमध्ये, ॐ स्त्रां मुखे, ॐ रं हृदि, ॐ हुं नाभौ, ॐ फट् जान्वोः। (सहस्त्रार हुं फट्) इति मन्त्रः।

* अथ करन्यासः *

रां रणत्किंकिणीज्वालाय अंगुष्ठाभ्यांनमः। रीं रिपुदावानलाय तर्जनीभ्यां नमः। रुं राक्षसभयनिवारणाय मध्यमाभ्यां नमः। रैं रक्षोत्सादनाय अनामिकाभ्यां नमः। रौं रण भीषणायक निष्ठिकाभ्यां नमः। रः रक्तमाल्याम्बरधराय करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः।

* अथ हृदयादिन्यासः *

रां राक्षसविध्वंसकाय हृदयाय नमः। रीं रक्ताक्षाय शिरसे स्वाहा। रुं रुद्रभीषणाय शिखायै वषट्। रैं राक्षसकुलनाशनाय कवचाय हुं। रौं रमेशप्रियाय नेत्राभ्याँ वौषट्। रः रक्तमाल्याम्बरधराय अस्त्राय फट्।

* अथ पञ्चोपचारपूजनम् *

लं, पृथिव्यात्मने वाणासुरमदभञ्जनाय श्रीचन्दनं समर्पयामि ।। १ ।। हं, आकाशात्मने दैत्यदानवमर्दनाय पारिजातपुष्पं समर्पयामि ।। २ ।। यं, वाय्वात्मने दुर्वासोगर्वखण्डनाय सुगन्धदशांगधूपंसमर्पयामि ।। ३ ।। रं, ब्रह्मात्मने वैकुण्ठनिवासाय भक्ष्य भोज्य, लेह्य, चोष्य, गुड़-घृत-दधिक्षीरादिशुभ्रशाल्योदन मोदकाद्यनेकपक्वान्न, कन्दमूलफलाद्यनेकचित्रान्न, पायसनिर्मलस्वादुविरजाजलसंयुक्त श्रीरमाहस्तनिर्मितमणिमयपात्रस्थित श्रीमहाविष्णुनिवेदितमहाप्रसादामृतान्नं समर्पयामि ।। ४ ।। जं, सोमात्मने पूगीफलनागवल्लीदललालवंगकंकोलजातीफलाद्यनेकशतौषधिसहितानेक सुगन्धपरिमलद्रव्य जातीपत्र कस्तूरीकर्पूर गोरोचनमौक्तिकचूर्णमिश्रितलक्ष्मीहस्तनिर्मितस्वर्णपात्रस्थित श्रीधरचर्वणशेषवीटिकां समर्पयामि । (सहस्रारहुं फट्) इति षडक्षरमन्त्र अष्टोत्तरशतवारं जपेत् । षड्लक्षात्मक पुरश्चरणः ।। श्रीसुदर्शनाय विद्महे हेतिराजाय धीमहि । तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् । इति सुदर्शनगायत्री मन्त्रः ।ॐ क्रों श्रीं एं ह्रीं क्ष्रीं ॐ जय जय सुदर्शननृसिंह प्रें खें रीं ठः स्वाहा।

※ इति पञ्चोपचारपूजनम् ※

* श्रीसुदर्शनकवचम् *

ॐ अस्य श्रीसुदर्शनकवचमहामन्त्रस्य, भगवानन्तर्यामी नारायणऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीसुदर्शनरूपी श्रीमन्नारायणो देवता। रं बीजम्: हुं शक्तिः। फट् कीलकम्। श्रीसुदर्शनप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

शंखं चक्रं गदां पद्मं मुसलं खड्गमेव च। धेनुं च यमपाशं च मुद्रा ह्येताः प्रकीर्तिताः॥

पाञ्चजन्याय शङ्खाधिपतये नमः। सुदर्शनाय हेतिराजाय नमः। कौमोदक्यै गदाधिपतये नमः। पं पद्माय नमः। मुं मुसलाय नमः। नं नन्दकाय खड्गाधिपतये नमः। सुं सुरभ्यै नमः। यं यमपाशाय नमः॥

ध्यानम्—

शङ्खं शार्ङ्गं सखेटं हलपरशुगदाकुन्तपाशान् दधानं
त्वन्यैर्वामैश्च चक्रेष्वसिमुसललसद्वज्रशूलांकुशाग्नीन्।
ज्वालाकेशं किरीटं ज्वलज्ज्वलननिभं बह्निमध्यस्थपीठं
प्रत्यालीढं त्रिनेत्रं रिपुगणदमनं भावयेच्चक्रराजम्॥

ओं अस्य श्रीसुदर्शनकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य, अहिर्बुध्न्यो भगवानृषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्रीसुदर्शन महाश्रीनृसिंहो देवता। सहस्रारमिति बीजम्। सुदर्शनमिति शक्तिः। चक्रमिति कीलकम्। मम सर्वरक्षार्थे श्रीसुदर्शनपुरुष श्रीनृसिंहप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ओं आचक्राय स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओं विचक्राय स्वाहा तर्जनीभ्यां नमः। ओं सुचक्राय स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः। ओं सूर्यचक्राय स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः। ओं ज्वालाचक्राय स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ओं सुदर्शनचक्राय स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ओं आचक्राय स्वाहा हृदयाय नमः। ओं विचक्राय स्वाहा शिरसे स्वाहा। ओं सुचक्राय स्वाहा शिखायै वषट्। ओं सूर्यचक्राय स्वाहा बलाय कवचाय हुम्। ओं ज्वालाचक्राय स्वाहा नेत्राभ्यां वौषट्। ओं सुदर्शनचक्राय स्वाहा अस्त्राय फट्। ओं भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः॥

ध्यानम्—

शङ्खं चक्रं च चापं परशुमसिमिषुं शूलपाशांकुशास्त्रं
बिभ्राणं वज्रखेटौ हलमुसलगदाकुन्तमत्युग्रदंष्ट्रम्।

ज्वालाकेशं त्रिनेत्रं ज्वलदनलनिभं हारकेयूरभूषं
ध्यायेत् षट्कोणसंस्थं सकलरिपुजनप्राणसंहारसंक्रम् ॥

ओं नमो भगवते सुदर्शनाय-भो भो सुदर्शन दुष्टं दारय दारय । दुरितं हन हन । पापं दह दह । रोगं मर्दय मर्दय । आरोग्यं कुरु कुरु । ओं ओं ह्लां ह्लां ह्लीं ह्लीं ह्लूँ ह्लूँ फट् फट् दह दह हन हन भीषय भीषय स्वाहा ॥

मस्तकं मे सहस्रारः फालं पातु सुदर्शनः । भ्रुवौ मे चक्रराट् पातु नेत्रे द्वेऽर्केन्दुलोचनः ॥१॥

कर्णौ वेदस्तुतः पातु घ्राणं मे सुविभीषणः । महादीप्तः कपोलौ मे ओष्ठौ रुद्रवरप्रदः ॥२॥

दन्तान् पातु जगद्वन्द्यः रसनां मम सर्वदा । सर्वविद्यार्णवः पातु गिरं वागीश्वरो मम ॥३॥

वीरसिंहो मुखं पातु चिबुकं भक्तवत्सलः । सर्वदा पातु कण्ठं मे मेघगम्भीरनिःस्वनः ॥४॥

मम स्कन्धयुगं पातु धराभारापहारकः । बाणासुरभुजारण्यदावाग्निः पातु मे भुजौ ॥५॥

कालनेमिशिरश्छेत्ता पातु मे कूर्परद्वयम् । करौ दिव्यायुधः पातु वज्रानखोपमः ॥६॥

कुक्षौ पातु महाशूरः स्तनौ शत्रुनिषूदनः । पातु मे हृदयं भक्तजनानन्दश्च सर्वदा ॥७॥

सर्वशास्त्रार्थसद्भूतिहेतुः पातूदरं मम । वक्षः पातु महाधारो दिवि दानवमर्दनः ।।८।।
पार्श्वौ मे पातु दीनार्तशरणागतवत्सलः । सर्वदा पृष्ठदेशं मे देवानामभयप्रदः ।।६।।
नाभिं षट्कोणधामा मे पातु घण्टारवः कटिम् । आदिमूलः पुमान् पातु गुह्यदेशंनिरन्तरम्।
ऊरू पातु महाशूरो जानुनो भीमविक्रमः । जङ्घे पातु महावेगो गुल्फौ पातु महाबलः ।।११।।
पादौ पातु सदा श्रीदो ब्रह्माद्यैरभिवन्दितः । पातु पादतलद्वन्द्वं विश्वभारो निरन्तरम् ।।
सुदर्शननृसिंहो मे शरीरं पातु सर्वदा । मम सर्वाङ्गरोमाणि ज्वालाकेशस्स रक्षतु ।।१३।।
मम सर्वाङ्गकान्ति वै कल्पान्ताग्निसमप्रभः । अंतर्बहिश्च मे पातु विश्वात्मा विश्वतोमुखः ।।
रक्षाहीनं च यत्स्थानं प्रचण्डस्तत्त रक्षतु । सर्वतो दिक्षु मे पातु ज्वालाशतपरीवृतः ।।
त्रिनेमिः पातु मे प्राणान् भ्रातृन् पात्वनलद्युतिः। भार्यां लक्ष्मीसखः पातु पुत्रान् पातु सुदर्शनः।
श्रीकरो मे श्रियः पातु बन्धून् पातु बलाधिकः । गोपांश्चैव पशून् पातु सहस्रारधरस्सदा ।।
क्षेत्रं विश्वंभरः पातु मित्रं पात्वघनाशनः । दिवारात्रं च मां पातु अहिर्बुध्न्यवरप्रदः ।।

षोडशोत्तुङ्गबाहुस्तु पातु मे राजसंमुखम् । वैरिविद्वेषसङ्घे तु संग्रामे शत्रुसूदनः ॥१९॥
अवान्तरा अबाधाश्च त्रासयेत्सार्वकालिकम् । आधिव्याधिमहाव्याधिमद्यतोपद्रवेऽपि च ।
अपमृत्युमहामृत्यू नाशयेच्चाक्रनायकः । परप्रत्युक्तमन्त्रांश्च यन्त्रतन्त्रविभञ्जनः ॥२१॥
सुदर्शनोऽयमस्माकं दुर्दशादुःखनाशनः । सर्वसंपत्प्रदाता मां चक्रराजो निरन्तरम्॥२२॥
जपं पातु जगद्वन्द्यो मानसामक्षयप्रदः । प्रमादांश्चास्त्रधामाऽसौ ज्ञानं रक्षतु सर्वदा ॥२३॥
अणिमादिमहैश्वर्यं पातु साम्राज्यसिद्धिदः । तिर्यग्ज्वालाग्निरूपश्च नष्टराज्यार्थदो मम ॥
राज्यं पातु सहस्रारः पादातिं पातु चाच्युतः । चतुरङ्गबलस्तोमं रक्ष त्वं चक्रभावन ॥
ज्योतिर्मयश्चक्रराजः सर्वान् वरुणरक्षकः । अखण्डमण्डितः पातु परचक्रापहारकः ॥२६॥
त्रिविक्रमश्चक्रराजः पातु धैर्यं सदा मम । नभो दशदिशव्याप्तिकीर्तिं पातु सुदर्शनः ॥
आयुर्बलं धृतिं पातु लोकत्रयभयापहः । सुधामण्डलसंविष्टो मायापञ्चसुशीतलः ॥२८॥
राजद्वारे सभामध्ये पातु मां चण्डविक्रमः । पूर्वे सुदर्शनः पातु आग्नेये पातु चक्रराट् ॥

याम्ये रथाङ्गकः पातु त्रिनेमिः पातु नैर्ऋते । लोकत्रयप्रभाकारज्वालो रक्षतु पश्चिमे ।।
षट्कोणः पातु वायव्ये ह्यस्त्रराजोत्तरां दिशम् ।ऐशान्यां चक्रराट्पातु मध्ये भूचक्रचक्रिणः।।
अनन्तादित्यसंकाशः क्ष्मान्तरिक्षौ च पातु मे । सर्वतो दिक्षु मे पातु ज्वालासाहस्रसंवृतः ।।
एवं सर्वत्र संरक्ष सर्वदा सर्वरूपवान् । सकारः पृथिवी ज्ञेयो हकारो अप उच्यते ।।३३।।
स्राकारो वायुरुक्तश्च रकारोऽम्बर उच्यते । हुं कारमग्निरित्याहुः फट्कारं सूर्यरूपकम् ।।
स्वाहाकारं न्यसेन्मूर्ध्नि पीतरक्तसुवर्णकम् । सकारं नासिकायां तु हकारं वदने न्यसेत् ।।
स्राकारं हृदये चैव सृष्टिसंहारकारणम् । रकारं विन्यसेत् गुह्ये हुंकारं जानुदेशके ।।
फकारं गुल्फदेशे तु टकारं पादयोर्न्यसेत् । सर्वाणि चैव वर्णानि जप्यान्यंगुलिपर्वसु ।।
क्षिप्रं सौदर्शनं चक्रं ज्वालामालातिभीषणम् । सर्वदैत्यप्रशमनं कुरु देववराच्युत ।।३८।।
सुदर्शन महाज्वाल छिन्धि छिन्धि सुवेदनाम् । परयन्त्रं च तन्त्रं च छिन्धि मन्त्रौषधादिकम्।।
सुदर्शनमहाचक्र गोविन्दस्य करायुध । सूक्ष्माधार महावेग छिन्धि छिन्धि सुभैरव ।।४०।।

छिन्धि पातं च लूतं च छिन्धि घोर महद्विषम् । इति सौदर्शनं दिव्यं कवचं सर्वकामदम् ॥
सर्वबाधाप्रशमनं सर्वव्याधिविनाशनम् । सर्वशत्रुक्षयकरं सर्वमङ्गलदायकम् ॥४२॥
त्रिसन्ध्यं विजयं नृणां सर्वदा विजयप्रदम् । सर्वपापप्रशमनं भोगमोक्षैकसाधनम् ॥४३॥
प्रातरुत्थाय यो भक्त्या पठेदेतत्सदा नरः । तस्य सर्वेषु कालेषु विघ्नः क्वापि न जायते ॥
यक्षराक्षसवेतालभैरवाश्च विनायकाः । शाकिनी डाकिनी ज्येष्ठा निद्रा बालग्रहादयः ॥४५
भूतप्रेतपिशाचाद्याः अन्ये दुष्टग्रहा अपि । कवचस्यास्य जप्तारं दृष्टमात्रेण तेऽखिलाः ॥४६॥
पलायन्ते यथा नागाः पक्षिराजस्य दर्शनात् । अस्यायुतं पुरश्चर्यं दशांशं तिलतर्पणम् ॥४७
हवनं तर्पणं चैव तर्पणं गन्धवारिणा । पुष्पाञ्जलिर्दशांशं च मिष्टान्नं संवृतप्लुतम् ॥४८॥
चतुर्विंशद्द्विजा भोज्या वैष्णवा वेदपारगाः । पञ्चसंस्कारसम्पन्नाः ततः कार्याणि साधयेत् ॥
विन्यस्यांगेष्विदं धीरो युद्धार्थं योऽभिगच्छति । रणे जित्वाऽखिलान् शत्रून् विजयीभवतिध्रुवम्

मन्त्रिताम्बु त्रिवारं वा पिबेत्सप्तदिनावधि । व्याधयः प्रविनश्यन्ति सकलाः कुक्षिसम्भवाः ॥

मुखप्रक्षालने नेत्रनासिकारोगनाशनम् । भीतानामभिषेकं च महाभयनिवारणम् ॥५२॥
सप्ताभिमन्त्रितानेन तुलसीमूलमृत्तिका । लेपान्नश्यन्ति ते रोगाः सद्यः कुष्ठादयोऽखिलाः ॥
ललाटे तिलकं स्त्रीणां मोहनं सर्ववश्यकृत् । परेषां मन्त्रयन्त्राणि तन्त्राण्यपि विनाशकृत् ॥
व्यालसर्पादिसर्वेषां विषापहरणं परम् । सौवर्णे रजते वापि भूर्जे ताम्रादिकेऽपि वा ॥५५॥
लिखित्वा त्वर्चयेद्भक्त्या स श्रीमान् भवति ध्रुवम् । बहुना किमिहोक्तेन यद्यद्वाञ्छति यो नरः

सकलं प्राप्नुयादस्य कवचस्य प्रसादतः ।

यदक्षरं पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वं क्षम्यतां स्वामिन् प्रसन्नोऽस्तु सुदर्शन ॥

अथ श्रीनारसिंह महामन्त्र प्रयोगः ।

हरिः ॐ अद्येत्यादि देशकालतिथिवारादि उच्चारण कर "अद्य मम वर्त्तमानशरीरस्थ कायिक वाचिक मानसिक भुक्ताभुक्त पीतापीत ज्ञाताज्ञात जन्मजन्मान्तरीय महापाप रूप सकल विधि रोग पीड़ा भूत प्रतादि दुष्ट ग्रहवाधादि सर्वारिष्ट शान्तये सर्वतोविजयारोग्यसमृद्धि-प्राप्तये च यथा संख्यैतद्दिनावधिपर्यन्तं श्रीनृसिंहमहामन्त्रैर्नित्यहवनमहं करिष्ये" । प्रसन्नतां यातु भगवान् नृसिंहः । श्रीनृसिंहमूलमन्त्रः--ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् । नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥ ॐ सहस्रार हुं फट् । अष्टोत्तर शतं नित्यं जपेत् ।

अथ हवन मन्त्राः—ॐ आं ह्रीं क्षौं क्रौं हुं फट् ॐ उग्राय नमो ममाद्य वर्त्तमान व्याधि रूप सर्वारिष्ट नाशनाय ॐ आं ह्रीं क्षौं क्रौं हुं फट् स्वाहा ॥ १ ॥

इसी प्रकार से आद्यन्त वीज "ममाद्य वर्त्तमान के आगे जो रोग पीड़ा ग्रहवाधा शत्रु-शमन विजय" आदि पद लगाकर मन्त्र पूर्ण पढ़ कर हवन करें। हवन के लिए घी शक्कर पंचमेवा अथवा गौ दुग्ध की तस्मै घी मेवा मिलाके। अभाव में यव तिलादि से ही करें। जो सुलभ हो सो निम्नोक्त नव मन्त्रों से एक सहस्र १०८-७१-५४ ३६—२८ (से कम न करें। २१-४१—७१ दिन जैसा कार्य हो वैसा हवन करें। मन्त्र यों है। ॐ उग्राय नमः स्वाहा। ॐ वीराय नमः स्वाहा। ॐ महाविष्णवे नमः स्वाहा। ॐ ज्वलन्ताय नमः स्वाहा। ॐ सर्वतोमुखाय नमः स्वाहा। ॐ नृसिहाय नमः स्वाहा। ॐ भीषणाय नमः स्वाहा। ॐ भद्राय नमः स्वाहा। ॐ मृत्युमृत्यवे नमः स्वाहा। 'ॐ आं ह्रीं क्षौं क्रौं हुं फट्। ॐ उग्राय वीराय महाविष्णवे ज्वलताय नृसिहाय भीषणाय भद्राय मृत्युमृत्यवे नमः ॐ आं ह्रीं क्रौं क्षौं हुं फट् स्वाहा'। इनका हवन जप जितेन्द्रिय आहार व्यवहार शुद्ध से करै। विशेष कर श्रीवैष्णव हो तो अति उत्तम हो। गुरुमुख से विधि जान लेवें तब करें। इस विधान से कठिन से कठिन रोगादि की शान्ति सहज ही में हो सकती है। विधि पूर्वक विश्वास भाव से १०८ हवन १० दिन करने से भयङ्कर ग्रहों को पीड़ा तथा भूत प्रेतादि बाधाओं से शीघ्र मुक्त होगा। इति

अस्य श्रीविष्णुकवचमहामन्त्रस्य । ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः । श्रीमहाविष्णुर्देवता । अच्युताय बीजम् । अनन्ताय शक्तिः । गोविन्दाय कीलकम् । श्रीमहाविष्णुप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । केशवाय अगुष्ठाभ्यां नमः । नारायणाय तर्जनीभ्यां नमः माधवाय मध्यमाभ्यां नमः । गोविन्दाय अनामिकाभ्यां नमः । विष्णवे कनिष्ठिकाभ्यां नमः । मधुसूदनाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । त्रिविक्रमाय हृदयाय नमः । वामनाय शिरसे स्वाहा । श्रीधराय शिखायै वषट् । हृषीकेशाय कवचाय हुम् । पद्मनाभाय नेत्रत्रयाय वौषट् । दामोदराय अस्त्राय फट् । भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः । अथध्यानम्—

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

पूर्वतो मां हरिः पातु पश्चाच्चक्री च दक्षिणे । कृष्ण उत्तरतः पातु श्रीशो विष्णुश्च सर्वतः ॥
ऊर्ध्वं मां नन्दकी पातु अधस्ताच्छार्ङ्गभृत्सदा । पादौ पातु सरोजांघ्रिः जंघे पातु जनार्दनः ॥

जानुनी मे जगन्नाथः ऊरू पातु त्रिविक्रमः । गुह्यं पातु हृषीकेशःपृष्ठं पातु ममाव्ययः ।।
पातु नाभिं ममानन्तः कुक्षिं राक्षसमर्दनः । दामोदरो मे हृदयं वक्षः पातु नृकेसरी ।।
कुक्षौ मे कालियारातिःभुजौ भक्तार्तिभञ्जनः । कण्ठं कालाम्बुदश्यामःस्कन्धौ मे कंसमर्दनः।।
नारायणोऽव्यान्नासां मे कर्णौ केशिप्रभञ्जनः । कपोले पातु वैकुण्ठःजिह्वां पातु दयानिधिः।।
आस्यं दशास्यहन्ताऽव्यात् नेत्रे मे पद्मलोचनः । भ्रुवौ मे पातु भूमीशःललाटं मे सदाऽच्युतः।।
मुखं मे पातु गोविन्दः शिरोगरुडवाहनः । मां शेषशायी सर्पेभ्यःव्याधिभ्यो भक्तवत्सलः ।।
पिशाचाग्निजलेभ्यो मामापद्भ्योऽवतु वामनः । सर्वेभ्यो दुरितेभ्यश्च पातु मां पुरुषोत्तमः ।।
इदं श्रीविष्णुकवचं सर्वमङ्गलदायकम् । सर्वरोगप्रशमनं सर्वशत्रु विनाशनम् ।।
आपत्कालेषु पठताम् आत्मरक्षाकरं परम् । त्रिसन्ध्यं य.पठेच्छुद्धःसर्वत्र विजयी भवेत् ।।



श्रीमद्वानाद्रियोगीश्वरचरणयुगे सक्तचित्तं महान्तं,
कन्दादच्छ्रीनिवासादीधगतसकलज्ञानजातं गुणाढ्यम् ।
धन्यो रङ्गाधिपेऽस्मिं कलिमलदहने वेङ्कटेशेऽनुरक्तं
वन्देऽहं नित्यवन्द्यं शरणदममलं विज्ञवर्यं खगेन्द्रम् ।।

॥ श्री ॥

श्रीसुदर्शनषट्कम्

सहस्रादित्यसंकाशं सहस्रवदनं प्रभुम् ।
सहस्रदं सहस्रारं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम् ॥१॥

हसन्तं हारकेयूरमुकुटाङ्गदभूषणम् ।
भूषणैर्भूषिततनुं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम् ॥२॥

स्राकारसहितं मन्त्रं पठन्तं शत्रुनिग्रहम् ।
सर्वदोषप्रशमनं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम् ॥३॥

रणत्किंकिणिजालेन राक्षसघ्नं तमद्भुतम् ।
व्याप्तकेशं विरूपाक्षं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम् ॥४॥
हुंकारभैरवं भीमं प्रणतार्तिहरं प्रभुम् ।
सर्वदुष्टप्रशमनं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम् ॥५॥
फट्कारान्तमनिर्देश्यं महामन्त्रेण संयुतम् ।
शुभं प्रसन्नवदनं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम् ॥६॥
एतैष्षड्भिस्स्तुतो देवः प्रसन्नो भगवान् हरिः ।
रक्षां करोति सर्वत्र सर्वत्र विजयी भवेत् ॥७॥

श्रीसुदर्शनषट्कं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीविजयलक्ष्मीसमेत श्रीचक्रराजपरब्रह्मणे नमः ॥

श्रीकूरनारायणमुनिभिरनुगृहीतं

श्रीसुदर्शनशतकम्

यस्य स्मरणमात्रेण विद्रवन्ति सुरारयः ।
सहस्रार नमस्तुभ्यं विष्णुपाणितलाश्रय: ॥
क्षिप्त्वा सुदर्शनं चक्रं ज्वालामालातिभीषणम् ।
सर्वरोगप्रशमनं कुरु देववराच्युत ॥
रंगेशविज्ञप्तिकरामयस्य चकार चक्रेशनुतिं निवृत्तये ।
समाश्रयेऽहं वरपूरणीं यः तं कूरनारायणनामकं मुनिम् ॥

ज्वालावर्णनं प्रथमम्

सौदर्शन्युज्जिहाना दिशि विदिशि तिरस्कृत्य सावित्रमर्चिः
बाह्याबाह्यान्धकारक्षतजगदगदङ्कारभूम्ना स्वधाम्ना ।
दोःखर्जूं दूरगजंद्विबुधरिपुवधूकण्ठवैकल्यकल्या
ज्वाला जाज्वल्यमाना वितरतु भवतां वीप्सयाऽभीप्सितानि ।१।

प्रत्युद्यातं मयूखैर्नभसि दिनकृतः प्राप्तसेवं प्रभाभिः
भूमौ सौमेरवीभिर्दिवि वरिवसितं दीप्तिभिर्देवधाम्नाम् ।
भूयस्यै भूतये वः स्फुरतु सकलदिग्भ्रान्तसान्द्रस्फुलिंगं
चाक्रं जाग्रत्प्रतापं त्रिभुवनविजयव्यग्रमुग्रं महस्तत् ।२।

पूर्णं पूरैस्सुधानां सुमहति लसतस्सोमबिंबालवाले
बाहाशाखावरुद्धक्षितिगगनदिवश्चक्रराजद्रुमस्य ।
ज्योतिश्छन्ना प्रवालः प्रकटितसुमनस्संपदुत्तंसलक्ष्मीं
पुष्णन्नाशामुखेषु प्रदिशतु भवतां सप्रकर्षं प्रहर्षम् ।३।

आरादारात् सहस्राद्विसरति विमतक्षेपदक्षाद्यदक्षात्
नाभेर्भास्वत्सनाभेर्निजविभवपरिच्छिन्नभूमेश्च नेमेः ।
आम्नायैरेककण्ठैः स्तुतमहिम महो माधवीयस्य हेतोः
तद्वो दिक्ष्वेधमानं चतसृषु चतुरः पुष्यतात् पूरुषार्थान् ।४।

श्यामं धामप्रसृत्या क्वचन भगवतः क्वापि बभ्रुः प्रकृत्या
शुभ्रं शेषस्य भासा क्वचन मणिरुचा क्वापि तस्यैव रक्तम् ।
नीलं श्रीनेत्रकान्त्या क्वचिदपि मिथुनस्यादिमस्यैव चित्रां
व्यातन्वानं वितानश्रियमुपचिनुताच्छर्म वश्चक्रभानम् ।५।

शंसन्त्युन्मेषमुच्छोषितपरमहसो भास्वतः कैटभारेः
इन्धे सन्ध्येव नक्तञ्चरविलयकरी या जगद्वन्दनीया ।
बन्धूकच्छायबन्धुच्छविघटितघनच्छेदभेदस्विनी सा
राथाङ्गी रश्मिभङ्गी प्रणुदतु भवतां प्रत्यहोत्थानमेनः ।६।

साम्यं धूम्याप्रवृद्धया प्रकटयति नभस्तारकाजालकानि
स्फौलिङ्गीं यान्ति कान्तिं दिशति यदुदये मेरुरङ्गारशङ्काम् ।
अग्निर्मग्नार्चिरैक्यं भजति दिननिशावल्लभौ दुर्लभाभौ
ज्वालावर्ताविव स्तः प्रहरणपतिजं धाम वस्तद्धिनोतु ।७।

दृष्टेऽधिव्योम चक्रे विकचनवजपासन्निकाशे सकाशं
स्वर्भानुर्भानुरेष स्फुटमिति कलयन्नागतो वेगतोऽस्य ।
निष्ठप्तो यैर्निवृत्तो विधुमिव सहसा स्प्रष्टुमद्यापि नेष्टे
घर्मांशुं ते घटन्तामहितविहतये भानवो भास्वरा वः ।८।

देवं हेमाद्रितुंगं पृथुभुजशिखरं बिभ्रतीं मध्यदेशे
नाभिद्वीपाभिरामामरविपिनवतीं शेषशीर्षासनस्थाम् ।
नेमिं पर्यायभूमिं दिनकरकिरणाद्दृष्टसोमः परीत्य
प्रीत्यै वश्चक्रवालाचल इव विलसन्नस्तु दिव्यास्त्ररश्मिः ।९।

एकं लोकस्य चक्षुर्द्विविधमपनुदत्कर्म नम्रत्रिनेत्रं
दात्रर्थानां चतुर्णां गमयदरिगणं पञ्चतां षड्गुणाढ्यम् ।
सप्तार्चिश्शोषिताष्टापदनवकिरणश्रेणिरज्यद्दशाशं
पर्यस्याद्द्वशशताङ्गावयवपरिवृढज्योतिरीशो वीरसाहस्रम् ।१०।

उच्चण्डे यच्छिखण्डे निबिडयति नभःक्रोडमर्कोऽटति द्याम्
अभ्यस्य प्रौढतापग्लपितवपुरपो बिभ्रतीरभ्रपङ्क्तीः ।
धत्ते शुष्यत्सुधोत्सो विधुरपमधुनः क्षौद्रकोशस्य साम्यं
रक्षन्त्वस्त्रप्रभोस्ते रचितसुचरितव्युष्टयो धूष्टयो वः ।११।

पद्मौघो दीर्घिकांभस्यवनिधरतटे गैरिकाम्बुप्रपातः
सिन्दूरं कुञ्जराणां दिशिदिशि गगने सान्ध्यमेघप्रबन्धः ।
पारावारे प्रवालो वनभुवि च तथा प्रेक्ष्यमाणः प्रमुग्धैः
साधिष्ठं वः प्रमोदं जनयतु दनुजद्वेषिणस्त्वैषराशिः ।१२।

भानो भा नो त्वदीया स्फुरति कुमुदिनीमित्र ते कुत्र तेजः

तारा: स्तारादधीरोऽस्यनल न भवतः स्वैरमैरम्मदार्चिः ।

शंसन्तीत्थं नभःस्था यदुदयसमये चक्रराजांशवस्ते

युष्माकं प्रौढतापप्रभवभवगदापक्रमाय क्रमन्ताम् ।१३।

जग्ध्वा कर्णेषु दूर्वांकुरमरिसुहृशामक्षिषु स्ववंधूनां

पीत्वा चांभश्चरन्त्यः सवृषमनुगता बल्लवेनादिमेन ।

गावो वश्चक्रभर्तुः परममृतरसं प्रश्रितानां दुहानाः

ऋद्धिं स्वालोकलुप्तत्रिभुवनतमसः सानुबन्धां दधन्ताम् ।१४।

सेनां सेनां मघोनो महति रणमुखेऽलं भयं लम्भयन्तीः
उत्सेकोष्णालुदोष्णां प्रथमदितिषदामावलीर्याऽवलीढे ।
विश्वं विश्वंम्भराद्यं रथपदधिपतेर्लीलया पालयन्ती
वृद्धिस्सा दीधितीनां वृजिनमनुजनुर्मार्जयत्वार्जितं वः ।१५।

तप्ता स्वेनोष्मणेव प्रतिभटवपुषामस्रधारा धयन्ती
प्राप्तेव क्षीबभाव प्रतिदिशमसकृत् तन्वती घूर्णितानि ।
वंशास्थिस्फोटशब्दं प्रकटयति पटून् याऽऽवहन्त्यट्टहासान्,
भा सा वः स्यन्दनाङ्गप्रभुसमुदयिनी स्पन्दतां चिन्तिताय ॥

देवैरासेव्यमानो दनुजभटभुजादण्डदर्पोष्मतप्तैः
आशारोधोतिलङ्घी लुठदुडुपटलीलक्ष्यडिण्डीरपिण्डः ।
रिङ्गज्ज्वालातरङ्गत्रुटितरिपुतरुव्रातपातोग्रमार्गः
चाक्रो वः शोचिरोघश्शमयतु दुरितापह्नवं दानवह्निम् ।१७।

भ्राम्यन्ती संश्रितानां भ्रमशमनकरी च्छन्नसूर्यप्रकाशा
सूर्यालोकानुरूपा रिपुहृदयतमस्कारिणी निस्तमस्का ।
धारासंपातिनी च प्रकटितदहना दीप्तिरस्त्रेशितुर्वः

चित्रा भद्राय विद्रावितविमतजना जायतामायताय ।१८।

निन्ये वन्येव काशी दवशिखिजटिलज्योतिषा येन दाहं
कृत्यावृत्या विलिल्ये शलभसुलभया यत्र चित्रप्रभावे ।
रुद्रोऽप्यद्रेर्दुहित्रा सह गहनगुहां यद्भयादभ्ययासीत्
दिश्याद्विश्वार्चितो वस्स शुभमनिभृतं शौरिहेतिप्रतापः ।१६।

उद्यन् बिम्बादुदारान्नयनजलहिम मार्जयन् निर्जरीणां
अज्ञानध्वान्तमूर्छाकरजनिरजनीभञ्जनव्यञ्जिताध्वा ।
न्यक्कुर्वाणो ग्रहाणां स्फुरणमपहरन्नर्चिषः पावकीयाः
चक्रेशार्कप्रकाशो दिशतु दश दिशो व्यश्नुवानं यशो वः ।२०।

वर्गस्य स्वर्गधाम्नामपि दनुजनुषां विग्रहं निग्रहीतुं
दातुं सद्यो [ऽ]बलानां श्रियमतिशयिनीं पत्रभङ्गानुवृत्त्या ।
योक्तुं देदीप्यते या युगपदपि पुरो भूतिमय्या प्रकृत्या
सा वो नुद्यादविद्यां द्युतिरमृतरसस्यन्दिनी स्यान्दनाङ्गी ॥

दाहंदाहं सपत्नान् समरभुवि लसद्भस्मना वर्त्मना यान्
क्रव्यादप्रेतभूताद्यभिलषितपुषा प्रीतकापालिकेन ।
कङ्कालैः कालधौतं गिरिमिव कुरुते यः स्वकीर्तेर्विहर्तुं
घृष्टिस्सान्द्रहिक्कं वरसकलमुपनयत्वायुधाग्रेसरस्य ॥२२॥

दग्धानां दानवानां सभसितनिचयैरस्थिभिस्सर्वशुभ्रां

पृथ्वीं कृत्वाऽपि भूयो नवरुधिरझरीकौतुकं कौणपेभ्यः।

कुर्वाणं बाष्पपूरैः कुचतटघुसृणक्षालनैस्तद्वधूनां

पापं पापच्यमानं शमयतु भवतां शस्त्रराजस्य तेजः।२३।

मागान्मोषं ललाटानल इति मदनद्वेषिणा ध्यायतेव

स्रष्ट्रा प्रोन्निद्रवासाम्बुजदल पटलप्लोषमुत्पश्यतेव।

वज्राग्निर्मास्म नाशं व्रजदिति चकितेनेव शक्रेण बद्धैः

स्तोत्रैरस्त्रेश्वरस्य द्यतु दुरितशतं द्योतमाना द्युतिर्वः।२४।

अथ नेमिवर्णनं द्वितीयम्

शस्त्रास्त्रं शात्रवाणां शलभकुलमिव ज्वालया लेलिहाना
घोषैः स्वैः क्षोभयन्ती विघटितभगवद्योगनिद्रान्समुद्रान् ।
व्यूढोरःप्रौढचारत्रुटितपटुरटत्कीकसक्षुण्णदैत्या
नेमिस्सौदर्शनो वः श्रियमतिशयिनीं दाशतादाशताब्दम् ॥
धारा चक्रस्य तारागणकणविततिद्योतितद्युप्रचारा
पारावाराम्बुपूरक्वथनपिशुनितोत्तालपातालयात्रा ।
गोत्राद्रिस्फोटशब्दप्रकटितवसुधामण्डली चण्डयाना
पन्थानं वः प्रदिश्यात्प्रशमनकुशला पाप्मनामात्मनीनम् ॥

यात्रा या त्रातलोका प्रकटितवरुणत्रा समुद्रे समुद्रे
सत्त्वासत्त्वासहोष्मा कृतसगरुदगस्पन्ददाना ददाना।
हानिं हा निन्दितानां जगति परिषदां दानवीनां नवीनां
चक्रे चक्रेशनेमिश्शमुपहरतु सा सप्रभावप्रभा वः।२७

यत्रामित्रान्दिधक्षौ प्रविशति बलिनो धाम निस्सीमधाम्नि
ग्रस्तापस्तापशोणैः प्रगुणितसिकतो मौक्तिकैश्शौक्तिकेयैः।
राशिर्वारामपारां प्रकटयति पुनर्वैरिदाराश्रुपूरैः
वृद्धिं निर्याति निर्यापयतु स दुरितान्यस्त्रराजप्रधिर्वः।२८।

कक्ष्यातौल्येन कृतनद्रूयफणमणीन् कल्यदीपस्य युञ्जन्
पातालान्तःप्रपाती निखिलमपि तमः स्वेन धाम्ना निगीर्य ।
दैतेयप्रेयसीनां वमति हृदि हतप्रेयसां भूयसा यः
चक्राग्रीयाग्रदेशो दहतु विलसितं बह्वसावंहसां वः ।२९।

कृष्णाम्भोदस्य भूषा कृतनयनन यव्याहृतिर्भार्गवस्य
प्राप्तामावेदयन्ती प्रतिभटसुदृशामुद्धटां बाष्पवृष्टिम् ।
निष्टप्ताष्टापदश्रीस्समममरचमूर्गर्जितैरुज्जिहाना
कीर्तिं वः केतकीभिः प्रथयतु सदृशीं चञ्चला चक्रधारा ।३०।

वप्राणां भेदनीं यः परिणतिमखिलश्लाघनीयां दधानः
क्षुण्णां नक्षत्रमालां दिशिदिशि विकिरन् विद्युता तुल्यकक्ष्यः
निर्याणेनोत्कटेन प्रकटयति नवं दानवारिप्रकर्षं
चक्राधीशस्य भद्रो वशयतु भवतां स प्रधिश्चित्तवृत्तिम् ।३१।

नाकौकश्शत्रुजत्रुत्रुटनविघटितस्कन्धनीरन्ध्रनिर्य-
न्नव्यक्रव्यास्रहव्यग्रसनरसलसज्ज्वालजिह्वालवह्निम् ।
यं दृष्ट्वा सांयुगीनं पुनरपि विदधत्याशिषो वीर्यवृद्ध्यै
गीर्वाणा निर्वृणाना वितरतु स जयं विष्णुहेतिप्रधिर्वः ।३२।

धन्वाध्वन्यस्य धारासलिलमिव धनं दुर्गतस्येव दृष्टिः
जात्यन्धस्येव पङ्गोः पदविहृतिरिव प्रीणनी प्रेमभाजाम् ।
प्रत्युर्मायाक्रियायां प्रकटपरिणतिर्विश्वरक्षाक्षमायां
मायामायामिनीं वस्त्रुटयतु महती नेमिरस्त्रेश्वरस्य ।३३।

त्राणं या विष्टपानां वितरति च यथा कल्प्यते कामपूर्तिः
न स्थातुं यत्पुरस्तात् प्रभवति कलयाऽप्योषधीनामधीशः ।
उन्मेषो याति यस्या न समयनियतिं सा श्रियं वः प्रदेयात्
न्यक्कृत्य द्योतमाना त्रिपुरहरदृशं नेमिरस्त्रेश्वरस्य ।३४।

नक्षत्रक्षोदभूतिप्रकर विकिरणश्वेतिताशावकाशा
जीर्णैः पर्णैरिव द्यां जलधरपटलैश्चूर्णितैरूणुवाना ।
आजावाजानवाजानतरिपुजनतारण्यमावर्तमाना
नेमिर्वात्येव चाक्री प्रणुदतु भवतां संहतं पापतूलम् ।३५।

क्षिप्त्वा नेपथ्यशाटीमिव जलदघटां जिष्णुकोदण्डचित्रां
तारापुञ्जं प्रसूनाञ्जलिमिव विपुले व्योमरङ्गे विकीर्य ।
निर्वेदग्लानिचिन्ताप्रभृतिपरवशानन्तरा दानवेन्द्रान्
नृत्यन्नानालयाढ्यं नट इव तनुतां शर्म चक्रप्रधिर्वः ।३६।

दौर्गत्यप्रौढतापप्रतिभटविभवा वित्तधारास्सृजन्ती
गर्जन्ती चोत्क्रियाभिर्ज्वलदनलशिखोद्दामसौदामनीका ।
अव्यात् क्रव्याद्धधूटीनयनजलभरैर्दिक्षु नव्याननाव्यान्
पुष्यन्ती सिन्धुपूरान् रथचरणपतेर्नेमिकादम्बिनी वः ।३७।

सन्दोहं दानवानामजसमजमिवाऽऽलभ्य जाज्वल्यमाने
वह्नावह्नाय जुह्वत्त्रिदशपरिषदे स्वस्वभागप्रदायी ।
स्तोत्रैर्ब्रह्मादिगीतैर्मुखरपरिसरं श्लाघ्यशस्त्रप्रयोगं
प्रातस्सङ्ग्रामसत्रं प्रधिरसुररिपोः प्रार्थितं प्रस्तुतां वः ।३८।

अथ अरवर्णनं तृतीयम् ॥

उत्पातालातकल्पान्यसुरपरिषदामाहवप्रार्थिनीनाम्
अध्वानध्वावबोधक्षपणचणतमःक्षेपदीपोपमानि ।
त्रैलोक्यागारभारोद्वहनसहमणिस्तम्भसम्पत्सखानि
त्रायन्तामन्तिमायां विपदि सपदि वोऽराणि सौदर्शनानि ॥
ज्वालाजालप्रवालस्तवकितशिरसो नाभिमावालयन्त्यः
सिक्ता रक्ताम्बुपूरैश्शकलितवपुषां शात्रवानीकिनीनाम् ।
चक्राक्रीडप्ररूढा भुजगशयभुजोपघ्ननिघ्नप्रचाराः
पुष्यन्त्यः कीर्तिपुष्पाण्यरकनकलताः प्रीतये वः प्रथन्ताम् ॥

ज्वालाजालाब्धिमुद्रं क्षितिवलयमिवाबिभ्रती नेमिचक्रं
नागेन्द्रस्येव नाभेः फणपरिषदिव प्रौढरत्नप्रकाशा ।
दत्तां वो दिव्यहेतेर्मतिमरविततिः ख्यातसाहस्रसङ्ख्या
सङ्ख्यावत्सङ्घचित्तश्रवणहरगुणस्यन्दिसन्दर्भगर्भाम् ।४१।

ब्रह्मेशोपक्रमाणां बहुविधविमतक्षोदसंमोदितानां
सेवायै देवतानां दनुजकुलरिपोः पिण्डिकाद्यङ्गभाजाम् ।
तत्तद्धामान्तसीमाविभजनविधये मानदण्डायमाना
भूमानं भूयसा वो दिशतु दशशती भास्वराणाममराणाम् ॥

ज्वालाकल्लोलमालानिविडपरिसरां नेमिवेलां दधाने
पूर्वेणाक्रान्तमध्ये भुवनमयहविर्भोजिना पूरुषेण ।
प्रस्फूर्जत्प्राज्यरत्ने रथपदजलधावेधमानैः स्फुलिङ्गैः
भद्रं वो विद्रुमाणां श्रियमरवितर्तिर्विस्तृणाना विधत्ताम् ॥

नासीरस्वैरभग्नप्रतिभटरुधिरासारधारावसेकान्
एकान्तस्मेरपद्मप्रकरसहचरच्छायया प्राप्य नाभ्या ।
मुक्तानीवाङ्कुराणि स्फुरदनलशिखादर्शितप्राक्प्रवाला
न्यव्याघातेन भव्यं प्रददतु भवतां दिव्यहेतेरराणि ॥४४॥

दावोल्कामण्डलीव द्रुमगणगहने वाडबस्येव वह्नेः
ज्वालावृद्धिर्महाब्धौ प्रवयसि तमसि प्रातरर्कप्रभेव ।
चक्रे या दानवानां हयकरटिघटासङ्कटे जाघटीति
प्राज्यं सा वः प्रदेयात् पदमरपरिषत् पद्मनाभायुधस्य ।४५।

तापाद्दैत्यप्रतापातपसमुपचितात् त्रायमाणं त्रिलोकीं
लौलैर्ज्वालाकलापैः प्रकटयदभितश्चीनपट्टाञ्चलानि ।
छात्राकारं शलाका इव कनककृताश्शौरिदोर्दण्डलग्नं
भूयासुर्भूषयन्त्यो रथचरणमरस्फूर्तयः कीर्तये वः ।४६।

नाभीशालानिखातां नहनसमुचितां वैरिलक्ष्मीवशानां
संयद्द्वारीहृतानां समनुविदधती काञ्चनालानपङ्क्तिम् ।
राज्या च प्राज्यदैत्यव्रजविजयमहोत्तम्भितानां भुजानां
तुल्या चक्रारमाला तुलयतु भवतां तूलवच्छत्रुलोकम् ।४७।

आनेमेश्चक्रवालात्त्विष इव वितताः पिण्डिकाचण्डदीप्तेः
दीप्ता दीपा इवाराद्गहनरणतमोगाहिनः पूरुषस्य ।
शाणे रेखायितानां रथचरणमये शत्रुशौण्डीर्यहेम्नां
रेखाः प्रत्यग्रलग्ना इव भुवनमरश्रेणयः प्रीणयन्तु ।४८।

दीप्तै र्चिःप्ररोहैर्दलवति विधृते बाहुनालेन विष्णोः
उद्यत्प्रद्योतनाभं प्रथयति पुरुषं कर्णिकार्वाणिकायाम् ।
चूडालं वेदमौलिं कलयति कमले चक्रनाम्नोपलक्ष्ये
लक्ष्मीं स्फारामराणि प्रतिविदधतु वः केसरश्रीकराणि ।४९।

धातुस्यन्दैरमन्दैः कलुषितवपुषो निर्झराम्भःप्रपातान्
अर्चिष्मत्या स्वमूर्त्या रथचरणगिरेर्नेमिनाभीतटस्य ।
व्याकुर्वाणाऽरपङ्क्तिर्वितरतु विभुताविस्तृतिं वित्तकोटी-
कोटीरच्छत्रपीठीकटककरिघटाचामरस्त्रग्विणीं वः ।५०।

अथ नाभिवर्णनं चतुर्थम् ॥

ऐक्येन द्वादशानामशिशिरमहसां दर्शयन्ती प्रवृत्तिं
दत्तः स्वर्लोकलक्ष्म्यास्तिलक इव मुखे पद्मरागद्रवेण ।
देयाद्दैतेयदर्पक्षतिकरणरणप्रीणिताम्भोजनाभिः
नाभिर्नाभिस्त्वमुर्व्यास्सुरपतिविभवस्पर्शि सौदर्शनीवः ।५१।
शस्त्रश्यामे शताङ्गक्षितिभृति तरलैरुत्तरङ्गे तुरङ्गैः
त्वङ्गन्मातङ्गनक्रे कुपितभटमुखच्छायमुग्धप्रवाले ।
अस्तोकं प्रस्नुवाना प्रतिभटजलधौ पाटवं बाडवस्य
श्रेयो वस्संविधत्तां श्रितदुरितहरा श्रीधरास्त्रस्य नाभिः ॥

ज्वालाचूडालकालानलचलनसमाडम्बरा सांपरायं
यासावासाद्य माद्यत्सुरसुभटभुजास्फोटकोलाहलाढ्यम् ।
दैत्यारण्यं दहन्ती विरचयति यशोभूतिशुभ्रां धरित्रीं
सा वश्चक्रस्य नक्रस्यदमृदितगजत्रायिणी नाभिरव्यात् ।५३।

विन्दन्ती सान्ध्यमर्चिर्विदलितवपुषः प्रत्यनीकस्य रक्तैः
स्फायन्नक्षत्रराशिर्दिशिदिशि कणशः कीकसैः कीर्यमाणैः ।
नाकौकःपक्ष्मलाक्षानवमदहसितच्छायया चन्द्रपादान्
राथाङ्गी विस्तृणाना रचयतु कुशलं पिण्डिकायामिनी वः ॥

निस्सीमं निस्सृताया भुजधरणिधराघाटतः कैटभारेः
आशाकूलङ्कषद्भ रहितबलमहाम्भोधिमासादयन्त्याः ।
चक्रऽवालापगायाश्चलदरलहरीमालिकादन्तुरायाः
बिभ्रत्यावर्तभावं भ्रमयतु भुवने पिण्डिका वः प्रशस्तिम् ॥

पाणौ कृत्वाहवाग्रे प्रतिभटविजयोपार्जितां वीरलक्ष्मीम्
आनीतायास्ततोऽस्याः स्वसविधमसुरद्वेषिणा पूरुषेण ।
प्रासादं वासहेतोर्विरचितमरुणै रश्मिभिस्सूचयन्ती
नाभिर्वो निर्मिमीतां रथचरणपते नर्वृतिं निर्विघाताम् ॥

डिण्डीरापाण्डुगण्डैररियुवतिमुखैः पिण्डिका कृष्णहेतेः
उच्चण्डाश्रुप्रवर्षैरुपरततिलकैरुक्तशौण्डीर्यचर्या ।
द्वित्रग्रामाधिपत्यद्रुहिणमदमषीदूषिताक्षक्षमाभृ-
त्सेवाहेवाकपाकं शमयतु भवतां कर्म शर्मप्रतीपम् ।५७।

पर्याप्तामुन्नतिं या प्रथयति कमलं या तिरोभाव्य भाति
स्रष्टुस्सृष्टेर्दवीयः कुवलयमहितं या बिभर्ति स्वरूपम् ।
भूम्ना स्वेनान्तरिक्षं कबलयति च या सा विचित्रा विधत्तां
दैतेयारातिनाभिद्रविणपतिपदद्रोहिणी संपदं वः ।५८।

वाणीवांगैश्चतुर्भिः सदसि सुमनसां द्योतमानस्वरूपा
बाह्वन्तःस्था मुरारेरभिमतमखिलं श्रीरिव स्पर्शयन्ती ।
दुर्गेवोग्राकृतिर्या त्रिभुवनजननस्थेमसंहारधुर्या
मर्यादालङ्घनं वः क्षपयतु महती हेतिवर्यस्य नाभिः ।५९।

स्रग्भिस्सन्तानजाभिर्मधुरमधुरसस्यन्दसन्दोहिनीभिः
पाटीरैः प्रौढचन्द्रातपचयसुषमालोपनैर्लेपनैश्च ।
धूपैः कालागरूणामपि सुरसुदृशो विभ्रमर्चासु यस्याः
गन्धं रुन्धन्ति सा वश्चिरमसुरभिदो नाभिरव्याद‌भव्यात् ।६०।

अंहस्संहृत्य दग्ध्वा प्रतिजनिजनितं प्रौढसंसारवन्या-
दूराध्वन्यानधन्यान्महति विनतिभिर्धामनि स्थापयन्ती ।
विश्रान्तिं शाश्वतीं या नयति रमयतां चक्रराजस्य:नाभिः
संयन्मोमुह्यमानत्रिदशरिपुदशासाक्षिणी साऽक्षिणी वः ।६१।

अथ अक्षवर्णनं पञ्चमम्

श्रुत्वा यन्नामशब्दं श्रुतिपथकटुकं देवनक्रीडनेषु
स्ववैरिस्वैरवत्यो भयविवशधियः कातरन्यस्तशाराः ।
मन्दाक्षं यान्त्यमन्दं प्रतियुवतिमुखैर्दर्शितोत्प्रासदर्पैः
अक्षं सौदर्शनं तत्क्षपयतु भवतामेधमानां धनायाम ।६२।

व्यस्तस्कन्धं विशीर्णप्रसवपरिकरं प्रत्तपत्त्रोपमर्दं
संयद्वर्षासु तर्षातुरखगपरिषत्पीतरक्तोदकासु ।
अक्षं रक्षस्तरूणामशनिवदशनैरापतन्मूर्ध्नि मूर्ध्नि
स्तादस्त्राधीशितुर्वः स्तबकितयशसे द्वेशिणां प्लोषणाय ।६३।

दीक्षां सङ्ग्रामसत्त्रे महति कृतवतो दीप्तिभिस्संहताभिः
जिह्वाले सप्तजिह्वे दनुजकुलहविर्जुह्वतो नेमिजुह्वा ।
वैकुण्ठास्त्रस्य कुण्ड महदिव विलसत्पिण्डिकावेदिमध्ये
दिश्याद्दिव्यर्द्धिदेश्यं पदमिह भवतामक्षतोन्मेषमक्षम् ।६४।

तुङ्गाद्दोरद्रिश‍ृङ्गाद्दनुजविजयिनः स्पष्टदानोद्यमानां
शत्रुस्तम्बेरमाणां शिरसि निपततः स्रस्तमुक्तास्थिपुञ्जे ।
रक्तैरभ्यक्तमूर्तेर्विदलनगलितैर्व्यक्तवीरायितद्धैः
हर्यक्षस्यारिभंगं जनयतु जगतामीडितं क्रीडितं वः ।६५।

उन्मीलत्पद्मरागं कटकमिव धृतं बाहुना यन्मुरारेः
दीप्तान् रश्मीन्दधानं नयनमिव यदुत्तारकं विष्टपस्य ।
चक्रेशार्कस्य यद्वा परिधिरभिदधद्दैत्यहत्यामिव द्राक्
अक्षं पक्षे पतित्वा परिघटयतु वस्तद्वरिष्ठां प्रतिष्ठाम् ।६६।

क्रीडत्प्राक्क्रोडदंष्ट्राहतिदलितहिरण्याक्षवक्षः कवाट-
प्रादुर्भूतप्रभूतक्षतजसमुदितारण्यमुद्रं समुद्रम् ।
उन्मीलत्किंशुकाभैरुपहसदमितैरंशुभिस्संशयघ्नीम्
अक्षां चक्रस्य दत्तामघशतशमनं दाशुषीं शेमुषीं वः ।६७।

पद्मोल्लासप्रदं यज्जनयति जगतीमेधमानप्रबोधां
यस्य च्छायासमाना लसति परिसरे रोहिणी तारकाग्र्या ।
नानाहेत्युन्नतत्वं प्रकटयति च यत्प्राप्तकृष्णप्रयाणं
त्रेधा भिन्नस्य धाम्नस्समुदय इव तत्पातु वश्चाक्रमक्षम् ।६८।

शोचिर्भिः पद्मरागद्रवसमसुषमैश्शोभमानावकाशं
प्रत्यग्राशोकरागप्रतिभटवपुषा भूषितं पूरुषेण ।
अन्तः स्वच्छन्दमग्नोत्थितभृगुतनयं क्षत्रियाणां क्षतानां
आरब्धं शोणितौघैस्सर इव भवतो दिव्यहेत्यक्षमव्यात् ।६९।

मत्तानामिन्द्रियाणां कृतविषयमहाकाननक्रीडनानां
सृष्टं चक्रेश्वरेण ग्रहणधिषणया वारिवद्वारणानाम् ।
गम्भीरं यन्त्रगत कमपि कृतधियो मन्वते यत्प्रदेयात्
अस्थूलां संविदं वस्त्रिजगदभिमतस्थूललक्षं तदक्षम् ।७०।

प्राणादीन् संनियम्य प्रणिहितमनसां योगिनामन्तरङ्गे
तुङ्गं सङ्कोच्य रूपं विरचितदहराकाशकृच्छ्रासिकेन ।
प्राप्तं यत्पूरुषेण स्वमहिमसदृशं धाम कामप्रदं वः
भूयात् तद्भूर्भुवस्स्वस्त्रयवरिवसितं पुष्कराक्षायुधाक्षम् ।७१।

विद्धान्वीध्रेण धाम्ना चरणनखभुवा बद्धवासस्य मध्ये
चक्राध्यक्षस्य बिभ्रत्परिहसितजपापुष्पकोशान्प्रकाशान् ।
शुभ्रैरभ्रैरदभ्रैश्शरदि तत इतो व्योम विभ्राजमानं
प्रातस्त्यादित्यरोचिस्ततमिव भवतः पातु राथाङ्गमक्षम् ।७२।

श्रीवाणीवाङ्मृडान्यो विदवति भजनं शक्तयो यस्य दिक्षु
प्राह व्यूहं यदाद्यं प्रथममपि गुणं भारती पाञ्चरात्री ।
घोरां शान्तां च मूर्तिं प्रथयति पुरुषः प्राक्तनः प्रार्थनाभिः
भक्तानां यस्य मध्ये दिशतु तदनघामक्षमध्यक्षतां वः ।७३।

रक्षःपक्षेण रक्षत्क्षतममरगणं लक्ष्यवैलक्ष्यमाजौ
लक्ष्मीमक्षीयमाणां बलमथनभुजे वज्रशिक्षानपेक्षे ।
निक्षिप्य क्षिप्रमध्यक्षयति जगति यद्दक्षतां दिव्यहेतेः
अक्षामामक्षमां तत्क्षपयतु भवतामक्षजिल्लक्षमक्षाम् ।७४।

अथ पुरुषवर्णनं षष्ठम्

ज्योतिश्चूडालमौलिस्त्रिनयनवदनष्षोडशोत्तुङ्गबाहुः
प्रत्यालीढेन तिष्ठन्प्रणवशशधराधारषट्कोणवर्ती ।
निस्सीमेन स्वधाम्ना निखिलमपि जगत्क्षेमवन्निर्मिमाणः
भूयात् सौदर्शनो वः प्रतिभटपरुषः पूरुषः पौरुषाय ।७५।
चाणो पौराणिकी यं प्रथयति महितं प्रेक्षणं कैटभारेः
शक्तिर्यस्येषुदंष्ट्रानखपरशुमुखव्यापिनी तद्विभूत्याम् ।
कर्तुं यत्तत्त्वबोधो न निशितमतिभिर्नारदाद्यैश्च शक्यः
दैवीं वो मानुषीं च क्षिपतु स विपदं दुस्तरामस्त्रराजः ॥

रूढस्तारालवाले रुचिरदलचयः श्यामलैश्शस्त्रजालैः
ज्वालाभिस्सप्रवालः प्रकटितकुसुमो बद्धसङ्घैः स्फुलिङ्गैः ।
प्राप्तानां पादमूलं प्रकृतिमधुरया च्छायया तापहृद्वः
दत्तामुद्दोःप्रकाण्डः फलमभिलषितं विष्णुसङ्कल्पवृक्षः ।७७।

धाम्नामैरम्मदानां निचयमिव चिरस्थायिनां द्वादशानां
मार्तण्डानां समूहं मह इव बहुलं रत्नभासामिर्वाद्धम् ।
अर्चिस्सङ्घातमेकीकृतमिव शिखिनां वाडबाग्रेसराणां
शङ्कन्ते यस्य रूपं स भवतु भवतां तेजसे चक्रराजः ।७८।

उग्रं पश्याक्षमुद्यद्भ्रु कुटि समुकुटं कुण्डलि स्पष्टदंष्टं
चण्डास्त्रैर्बाहुदण्डैर्लसदनलसमक्षौमलक्ष्योरुकाण्डम् ।
प्रत्यालीढस्थपादं प्रथयतु भवतां पालनव्यग्रमग्रे
चक्रेशोऽकालकालेरितभटविकटाटोपलोपाय रूपम् ॥७९॥

चक्रं कुन्तं कृपाणं परशुहुतवहावङ्कुशं दण्डशक्ती
शङ्खं कोदण्डपाशौ हलमुसलगदावज्रशूलांश्च हेतीन् ।
दोर्भिस्सव्यापसव्यैर्दधदतुलबलस्तम्भितारातिदर्पैः
व्यूहस्तेजोऽभिमानी नरकविजयिनो जृम्भतां संपदेवः ।८०।

पीतं केशे रिपोरप्यसृजि रथपदे संश्रितेऽप्युत्कटाक्षं
चन्द्राधःकारि यन्त्रे वपुषि च दलने मण्डले च स्वराङ्कम् ।
हस्ते वक्त्रे च हेतिस्तबकितमसमं लोचने मोचने च
स्तादस्तोकाय धाम्ने सुरवरपरिषत्सेवितं दैवतं वः ।८१।

चित्राकारैः स्वचारैर्मितसकलजगज्जागरूकप्रतापः
मन्त्रं तन्त्रानुरूपं मनसि कलयतो मानयन्नात्मगुह्यान् ।
पञ्चाङ्गस्फूर्तिनिर्वर्तितरिपुविजयो धाम षण्णां गुणानां
लक्ष्मीं राजासनस्थो वितरतु भवतां पुरुषश्चक्रवर्ती ।८२।

अक्षावृत्ताभ्रमालान्यरविवरलुठच्चन्द्रचण्डद्युतीनि
ज्वालाजालावलीढस्फुटदुडुपटलीपाण्डुदिङ् मण्डलानि ।
चक्रान्ताक्रान्तचक्राचलचलितमही चक्रवालातंशेषा-
ण्यस्त्रग्रामाग्रिमस्य प्रददतु भवतां प्रार्थितं प्रस्थितानि ।८३।

शूलं त्यक्तात्मशीलं सृणिरणुकघृणिः पट्टिसः स्पष्टसादः
शक्तिः शालीनशक्तिः कुलिशमकुशलं कुण्ठधारः कुठारः ।
दण्डश्चण्डत्वशून्यो भवति तनु धनुर्यत्पुरस्तात्स वः स्तात्
ग्रस्ताशेषास्त्रगर्वो रथचरणपतिः कर्मणे शार्मणाय ।८४।

क्षुण्णाजानेयवृन्दं क्षुभितरथगणं सन्नसान्नाह्ययूथं
क्ष्वेलासंरम्भहेलाकलकलविगलत्पूर्वगीर्वाणगर्वम् ।
कुर्वाणस्सांपरायं रथचरणपतिः स्थेयसीं वः प्रशस्ति
दुग्धां दुग्धाब्धिभासं भयविवशशुनासीरनासीरवर्ती ।८५।

दुह्यद्दोश्शालिमालिप्रहरणरभसोत्तानिते वैनतेये
विद्राति द्राति द्राक्प्रयुक्तः प्रधनभुवि परावर्तमानेन भर्त्रा ।
निर्जित्य प्रत्यनीकं निरवधिकचरद्धास्तिकाश्वीयरथ्यं
पथ्यं विश्वस्य दाश्वान् प्रथयतु भवतां हेतिरिन्द्राणुजस्य ॥

नन्दिन्यानन्दशून्ये गलति गणपतौ व्याकुले बाहुलेये
चण्डे चाकित्यकुण्ठे प्रमथपरिषदि प्राप्तवत्यां प्रमाथम् ।
उच्छिद्याऽऽजौ बलिष्ठं बलिजभुजवनं यो ददावादिभिक्षोः
भिक्षां तत्प्राणरूपां स भवदकुशलं कृष्णहेतिः क्षिणोतु ॥

रक्तौघाभ्यक्तमुक्ताफललुलितलसद्वीचिवृद्धौ महाब्धौ
सन्ध्यासम्बद्धताराजलधरशबलाकाशनीकाशकान्तौ ।
गम्भारारम्भमम्भश्चरमसुरकुलं वेदविघ्नं विनिघ्नन्
निर्विघ्नं वः प्रसूतां व्यपगतविपदं सम्पदं चक्रराजः ।६६।

काशीविप्लोषचैद्यक्षपणधरणिजध्वंससूर्यापिधान-
ग्राहद्वैधात्वमालित्रुटनमुखकथावस्तुसत्कीर्तिगाथाः ।
गीयन्ते किन्नरीभिः कनकगिरिगुहागेहिनीभिर्यदीयाः
देयाद्दैतेयवैरी स सकलभुवनश्लाघनीयां श्रियं वः ॥

नानावर्णात् विवृण्वन्विरचितभुवनानुग्रहान् विग्रहान्यः
चक्रेष्वष्टासु मृष्टासुरवरतरुणीकण्ठकस्तूरिकेषु ।
आतारादर्णमालावधिषु वसति यः पूरुषो वः स वध्यात्
व्यध्वैरुद्धूतसत्त्वैरुपहितमवहिर्वर्तित्वमध्वान्तवर्ती ।९०।

द्वात्रिंशत्षोडशाष्टप्रभृतिपृथुभुजस्फुर्तिभिर्मूर्तिभेदैः
कालाद्ये चक्रषट्के प्रकटितविभवः पञ्चकृत्यानुरूपम् ।
अर्थानामर्थितानामहरहरखिलं निर्विलम्बैर्विलम्बैः
कुर्वाणो भक्तवर्गं कुशलिनमवतादायुधग्रामणीर्वः ॥६१॥

कोणैरणैस्सरोजैरपि कपिशगुणैष्षड्भिरुद्भिन्नशोभे
श्रीवाणीपूर्विकाभिर्दधति विकसतश्शक्तिभिः केशवादीन् ।
तारान्ते भूपुरादौ रथचरणगदाशार्ङ्गखड्गाङ्किताशे
यन्त्रे तन्त्रोदिते वः स्फुरतु कृतपदं लक्ष्म लक्ष्मीसखस्य ॥

दंष्ट्राकान्त्या कडारे कपटकिटितनोः कैटभारेरधस्तात्
ऊर्ध्वं ह्रासेन विद्धे नरहरिवपुषो मण्डले वासवीये ।
प्राक्प्रत्यक्सान्ध्यसान्द्रच्छविभरभरिते व्योम्नि विद्योतमानः
दैतेयोत्पातशंसी रविरिव रहयत्वस्त्रराजो रुजं वः ॥६३॥

कोणे क्वापि स्थितोऽपि त्रिभुवनविततश्चन्द्रधामाऽपि रूक्षः
रुक्मच्छायोऽपि कृष्णाकृतिरनलमयोऽप्याश्रितत्राणकारी ।
धारासारोऽपि दीप्तो दिनकररुचिरोऽप्युल्लसत्तारकश्रीः
चक्रेशश्चित्रभूमा वितरतु विमतत्रासनं शासनं वः ॥६४॥

शुक्लश्शक्र ! स्तवस्ते सह दहन ! कलां काल तेऽयं न कालः
किं वो रक्षांसि रक्षा तव फलतु पते! यादसां पादसेवा ।
वायो हृद्योऽसि भर्तुस्त्यज धनद मदं सेव्यतां त्र्यंबकेति
प्राहुर्यद्यन्त्रपालास्स दनुजविजयी हन्तु तन्द्रालुतां वः ॥

गायत्र्यर्णारचक्रे प्रथममनुसखस्मेरपत्रारविन्दे
बिम्बं वह्नेस्त्रिकोणं वहति जयिजयाद्यष्टाशक्तौ निषण्णा ।
शोकं वोऽशोकमूले पदसविधलसद्धोमभीमाक्षभीमा
पुंसो दिव्यास्त्रधामा पुरुषहरिमयी मूर्तिरस्यत्वपूर्वा ॥९६॥

पाश्चात्याशोकपुष्पप्रकरनिपतितैः प्राप्तरागं परागैः
सन्ध्यारोचिस्सगन्धैः स्वपदशशधरं प्रेक्ष्य तारानुषक्तम् ।
पद्मानाबद्धकोशानिव सुरनिवहैरञ्जलीन् कल्प्यमानान्
चक्राधीशोऽभिनन्दन् प्रदिशतु सदृशीमुत्तमश्लोकतां वः ।९७।

रक्ताशोकस्य वेदस्य च विहितपदं प्राप्तशाखस्य मूले
चक्रैरस्त्रैस्तदाद्यैरपि महितचतुर्द्विश्चतुर्बाहुदण्डम् ।
आसीनं भासमानं स्थितमपि भयतस्त्रायतां तत्वमेकं
पश्चात् पूर्वत्र भागे स्फुटनरहरितासानुषं जानुषाढः ।।९८।।

प्राणे दत्तप्रयाणे मुषितदिशि दृशि त्यक्तसारे शरीरे
मत्यां व्यामोहवत्यां सतमसि मनसि व्याहते व्याहृते च ।
चक्रान्तर्वर्ति मृत्युप्रतिभयमुभयाकारचित्र पवित्रं
तेजस्तत्तिष्ठतां वस्त्रिदशकुलधनं त्रीक्षणं तीक्षणदंष्ट्रम् ॥९९॥

यस्मिन् विन्यस्य भारं विजयिनि जगतां जङ्गमस्थावराणां
लक्ष्मीनारायणाख्यं मिथुनमनुभवत्यत्युदारान् विहारान् ।
आरोग्यं भूतिमायुः कृतमिह बहुना यद्यदास्थापदं वः
तत्तत्सद्यः समस्तं दिशतु स पुरुषो दिव्यहेत्यक्षवर्ती ॥१००॥

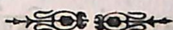
पद्मानां तत्त्वविद्याद्युमणिगिरिशबोध्यङ्गसंख्याधराणाम्
अर्चिष्यङ्गेषु नेम्यादिषु च परमतः पुंसि षड्विंशतेश्च ।
सङ्ख्यैस्सौदर्शनं यः पठति कृतमिदं कूरनारायणेन
स्तोत्रं निर्विष्टभोगो भजति स परमां चक्रसायुज्यलक्ष्मीम् ॥

इति श्रीकूरनारायणमुनिभिरनुगृहीतं
श्रीसुदर्शनशतकं समाप्तम् ॥



॥ श्रीः ॥

॥ श्रीसुदर्शनकवचम् ॥



प्रसीद भगवन् ब्रह्मन् सर्वमन्त्रज्ञ नारद ।
सौदर्शनं तु कवचं पवित्रं ब्रूहि तत्वतः ॥ १ ॥

नारदः —

शृणुष्वेह द्विजश्रेष्ठ ! पवित्रं परमाद्भुतम् ।
सौदर्शनं तु कवचं दृष्टादृष्टार्थसाधकम् ॥ २ ॥
कवचस्यास्य ऋषिर्ब्रह्मा छन्दोऽनुष्टुप्तथा स्मृतम् ।
सुदर्शनमहाविष्णुर्देवता संप्रचक्षते ॥ ३ ॥
हां बीजं शक्तिरत्रोक्ता ह्रीं क्रों कीलकमिष्यते ।
शिरस्सुदर्शनः पातु ललाटं चक्रनायकः ॥ ४ ॥
घ्राणं पातु महादैत्यरिपुरव्याद्दृशो मम ।
सहस्रारश्श्रुतिं पातु कपोलं देववल्लभः ॥ ५ ॥
विश्वात्मा पातु मे वक्त्रं जिह्वां विद्यामयो हरिः ।
कण्ठं पातु महाज्वालः स्कन्धौ दिव्यायुधेश्वरः ॥६॥
भुजौ मे पातु विजयी करौ कैटभनाशनः ।
षट्कोणसंस्थितः पातु हृदयं धाम मामकम् ॥ ७॥

मध्यं पातु महावीर्यः त्रिनेत्रो नाभिमण्डलम् ।
सर्वायुधमयः पातु कटिं श्रोणिं महाद्युतिः ॥ ८ ॥
सोमसूर्याग्निनयनः ऊरू पातु च मामकौ ।
गुह्यं पातु महामायः जानुनी तु जगत्पतिः ॥ ९ ॥
जङ्घे पातु ममाजस्रं अहिर्बुध्न्यसुपूजितः ।
गुल्फौ पातु विशुद्धात्मा पादौ परपुरञ्जयः ॥१०॥
सकलायुधसंपूर्णः निखिलाङ्गं सुदर्शनः ।
य इदं कवचं दिव्यं परमानन्ददायिनम् ॥ ११ ॥
सौदर्शनमिदं यो वै सदा शुद्धः पठेन्नरः ।
तस्यार्थसिद्धिर्विपुला करस्था भवति ध्रुवम् ॥१२॥
कूष्माण्डचण्डभूताद्याः ये च दुष्टा ग्रहास्स्मृताः ।
पलायन्तेऽनिशं भीताः वर्मणोऽस्य प्रभावतः ॥१३॥
कुष्ठापस्मारगुल्माद्याः व्याधयः कर्महेतुकाः ।
नश्यन्त्येतन्मन्त्रिताम्बुपानात्सप्तदिनावधि ॥ १४ ॥
अनेन मन्त्रितां मृत्स्ना तुलसीमूलसंस्थिताम् ।
ललाटे तिलकं कृत्वा मोहयेत्त्रिजगन्नरः ॥१५॥
वर्मणोऽस्य प्रभावेन सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥
इति श्रीभृगुसंहितोक्तश्रीसुदर्शनकवचं संपूर्णम् ॥

—×—

श्रीसुदर्शनशतक शुद्धीपत्र

सुदर्शनशतक में कुछ अशुद्धी रह गई हैं उनको शुद्ध करके ही पाठ करें, ये प्रार्थना है।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	३	गजद्वि	गर्जद्वि	३१	८	नर्वृ ति	निर्वर्तं
४	४	जाज्बल्य	जाज्वल्य	३२	२	वषै	वर्षै
६	८	साघिष्ठं	साधिष्ठं	३२	६	बिभर्ति	विभर्ति
१०	५	दुर्वाकुर	दुर्वांकुर	३३	२	स्पशयन्ती	स्पर्शयन्ती
१२	४	पह्लवं	पाह्लवं	३४	७	स्त्रवैरि	स्ववैंरि
१५	४	पापच्यमान	पापच्यमानं	३८	७	यन्त्रगत	यन्तगर्त
१७	८	×	सदुरितान्यस्त्र	४१	५	चाणी	वाणी
१८	१	कतनद्रूय	कद्रूतनय	४४	५	गज्ञाग	गज्जाग
२१	१	।वकिरण	विकिरण	४७	७	गम्भारा	गम्भीरा
२१	४	प्रणुदतु	प्रणदतु	४८	२	ग्राहद्द्वेधा	ग्राहद्वेधा
२३	८	प्रातये	प्रीतये	४८	५	ननावर्णात्	नानावर्णान्
२६	३	सङ्कटे	सङ्कटे	५१	६	जयादष्ट्रा	जयादष्ट्र
३०	७	लाक्ष	लाक्षी	५२	३	वद्ध	वद्ध

❀ तत्तत् कार्य सिद्धि के लिए संपुट संग्रह ❀

श्लोक संख्या	श्लोक संपुट		कार्य
४७	नाभीशालानिखातां	——	शत्रु पराजयार्थ
५५	निस्सीमं निःसृताया	——	ख्याति प्राप्ति के लिए
५७	डिण्डीरापाण्डुगण्डे	——	पापकर्म विनाशनार्थ
५८	पर्याप्तामुन्नतिं	——	संपत्ति प्राप्त्यर्थ
७२	प्राणादीन् संन्नियम्य	——	मनोरथ सिद्ध्यर्थ
७६	वाणी पौराणिकी	——	व्याधि निवारणार्थ ५ आवृत्ति
८७	नन्दिन्यानन्दशून्ये	——	दारिद्र विनाशनार्थ ,,
८८	रक्तौघाभ्यक्तमुक्ता	——	राज (मुकद्मा) जयार्थ
८९	काशीविप्लोष चैद्य	——	,,
९३	दंष्ट्राकान्त्या	——	रोग निवृत्त्यर्थ

मिलने का पता :—

१ श्री सत्यनारायण मन्दिर,
पो० लक्ष्मण भूला, (उत्तर प्रदेश)

पं० खगेन्द्राचार्य रा. दा.
श्रीनिकेतन मरीनड्राइव
बम्बई, ४००००२

श्रीरङ्गनाथ प्रेस, वृन्दावन